हिन्दी कथा साहित्य में स्त्रियों का शोषण और नारी मुक्त आंदोलन

Name of the Author: डॉ श्रीमती के. चंद्रा,
Designation: आचार्य
Name of Department: हिंदी
Name of Organization: एस. टी. एस. एन स्नातक कालेज, कदीरि, अनंतपुर (जिला), भारत

प्रस्तावना :

आज हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श सशक्त विषयवस्तु बना हुआ है। पितृसत्तात्मक समाज ने उसे स्त्री बनाकर परंपराओं के आढ में उसका शोषण करते रहे। हिंदी कथा साहित्य में कथाकारों ने नारी की इस मूक पीड़ा को अपनी पीड़ा समझ कर उद्घाटन किया। हिंदी कथा साहित्य में नारी के शोषित स्वरूप एवं दास्थ रूप नारी की छवि को तोड़ने की अकुलाहट को प्रकट किया है। समाज के सभी क्षेत्रों में पुरुष की सहयोगी रही नारी को भारतीय समाज ने उचित स्थान नहीं दिया। अतः नारी की उपेक्षा, शोषण एवं नारी मुक्त आंदोलन पर हिंदी कथा साहित्य में साहित्यकारों ने अपनी विश्लेषणात्मक दृष्टि प्रकट की है। भारतीय समाज में स्त्री को प्राचीन काल से ही गृहिणी पद से सुशोभित किया गया, अतः उसके बाहर आने की समस्या ही नहीं थी। बचपन में वह पिता के संरक्षण में रहती थी, विवाहित होने पर पति का कठोर नियंत्रण रहता था और वृद्धावस्था में बच्चों की इच्छानुसार चलना पड़ता था। इस तरह माना जाता है कि पुरुष को केन्द्र बनाकर नारी का जीवन चक्र चलता रहता है। स्त्री के जीवन - चक्र की धुरी पुरुष ही है। समाज और परिवार की मान्यताओं के अनुसार ही स्त्री का जीवन चलता है और हम जानते हैं कि ये दोनों ही पुरुष-प्रधान संस्थाएँ हैं। स्वभाव से संवेदनशील होने के कारण स्त्री पारिवारिक और सामाजिक मान्यताओं और को संपूर्ण रूप ग्रहण करती है। उनका निर्वहण भी करती है। स्त्री अपने इस निष्ठापूण निर्वहण के कारण पुरूष की धूर्तता, धोखा- धडियों एवं रोब-दाब को झेलना पड़ता है। वह जैसा चाहती है, उस तरह से कुछ होता नहीं है। उसे अपने को पुरूष - प्रधान व्यवस्था के अनुरूप ढालना पडता है। उच्च आदर्शो के बावजूद वह समाज में गौरवपूर्ण स्थान बना नहीं पायी।पुरुष गर्भस्त शिशु से मृत्यु तक निरुपद तथा स्वच्छंद जीव है। जन्म से मरण तक आध्धान्त अपना आधिपत्य चलाता रहता है। स्त्री पुरूषसत्तात्मक आधिपत्य का विरोध करती है, और नव नारी युग का आविर्भाव चाहती है।

शिक्षा के व्यापक प्रचार - प्रसार के फलस्वरूप आज स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सचेष्ट है। उसमें एक नवीन चेतना का सफुरण हुआ। वर्तमान काल में आर्थिक व्यवस्था ने उसे और भी प्रोत्साहन दिया कि वह घर की सीमाओं को पार करे। परिणामस्वरूप स्त्री को नौकरी करना आवश्यक हो गया और उसने अपने अधिकारों की मांग की। स्त्री किसी की कृपा पर आश्रित न रहकर स्वावलंबी बनने लगी। पारिवारिक और सामाजिक फैसले केवल पुरुष का ही था। लेकिन जबसे स्त्री शिक्षित हुई, चेतना आई और स्वावलंबन हुई, तब से पुरूष की जड़ें हिलने लगीं है। आज स्त्री अपनी पहचान के लिए सारे बंधन तोड़ रही है। वह अपनी स्व-अस्तितव की लड़ाई लड़ने में रत है। युगों से पीड़ित स्त्री, पुरुष की दासी

न बनकर अपने अधिकारों की मांग की। स्त्री को पुरुष के बराबर का पद मिलना चाहिए। समाचार - पत्रों, अधिवशनो और पुस्तकों में तो यह पद मिलता रहता है। परन्तु कानून और देश की आर्थिक योजनाओं में स्थिति नहीं के बराबर है। स्त्रियाँ आज समाज में स्त्रियों के उद्धार का आंदोलन कर रही है और अपनी स्थिति को दृढ बनाने में तुली हुई है। आज की नारी का आंदोलन कहता है कि - - ' '

नारी को पद चाहिए जग में पुरुष समान,
वह लेकर ही रहेगी, —बोल रहे बलिदान।

स्त्रियों की उपेक्षा एवं शोषण:

हर तरह की निष्ठा और सेवाभाव के बावजूद भारतीय स्त्री समाज में महत्वपूर्ण व्यक्ति नहीं मानी जाती है। हर तरह की गैर जिम्मेदारी और अदूरदर्शीता के बावजूद पुरुष विशेष महत्व का बना हुआ है। निर्णय का बिन्दु पुरुष के यहां ही बनता है। यह स्त्री की सबसे बड़ी विडंबना है। स्त्री पहचान एवं प्रतिष्ठा के लिए छटपटाती रही। मगर समाज और परिवार दोनों स्तरों पर स्त्री की उपेक्षा रही और शोषण होते आया है। हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री की इस उपेक्षित, शोषित स्थितियों का विश्लेषण कर, स्त्री के प्रति पुरुष समाज के वस्तुवादी एवं भोगवादी दृष्टिकोण के प्रतिपादनो का उद्घाटन किया है। मन्नू भण्डारी की 'अकेली' की सोमू बुआ बड़ी सहृदयता के साथ परिवार को सम्हालती है और पति के तीर्थयात्रा पर जाने पर अडोस-पडोस की महिलाओं के कामकाज में हाथ बटाती है। किसी के घर में मुंडन हो, जनेऊ हो, शादी हो या गमी बुआ पहुंच जाती है, मानो दूसरों के घर में नहीं, अपने ही घर में काम कर रही हो। लेकिन उसको न परिवार से सहानुभूति मिलती है, न समाज की ओर से। रिश्तेदारों की ओर से शादी का निमंत्रण तक उसे मिलता नहीं। इस उपेक्षा के कारण बुआ समाज के प्रति ही नहीं, जीवन के प्रति भी उदास है, और जीवन में नितांत अकेली रह जाती है। बुआ के इस अकेलेपन का उपचार केवल थोड़ी - सी हमदर्दी है। संवेदनाओं की उपेक्षा से स्त्री टूट जाती है। वह संवेदनाशून्य समाज में जी नहीं पाती है।

मार्कण्डेय से लिखित "वासवी की मां" की मृणालिनी पुरुष की भोगवादी प्रवृत्ति का शिकार होती है। पति रतनलाल शराबी और वासनालोलुप है। फिर भी मृणालिनी उसके प्रति निष्ठा रखती है। व्यापार के दौरान पति घर से बाहर रहता है। उसकी बेटी वासवी पर रतनलाल के मित्र की नजर पडती है। इसको जानते हुए भी अपने फायदे कारे दृष्टि में रखकर रतनलाल चुप रहता है। रतनलाल के मित्र की लपंटता का शिकार खुद मृणालिनी होती है। इस तरह रतनलाल और उसका मित्र दोनों मृणालिनी का उपभोग करते चलते हैं। यह एक प्रकार से पुरूष द्वारा स्त्री की उपेक्षा के साथ - साथ उसका शोषण भी प्रकट होता है। स्त्री के प्रति पुरूष इस उपेक्षा एवं शोषण प्रवृत्ति को हिंदी कथा साहित्य में व्यक्त किया गया है। शैलेशमटियानी की "लाटी" कहानी की लाटी को लूटने का हर प्रकार का जाल समाज में बिछाया जाता है। जवान ही नहीं, बूढों तक की नजरें उसके देह पर लगी हुई हैं। बुकसेलर सोचता है —"उत्तम लाटी डिगरवा काने के साथ नहीं, बल्कि उसके साथ ज्यादा अच्छी लग सकती है।"

डॉ शीला रजवार जी का कहना है कि इन सबके अंदर वह पुरुष छिपा हुआ है जो नारी को केवल भोग की वस्तु समझता है और उसका शोषण करता है। पुरूष में छिपी इस शोषण प्रवृत्ति के कारण स्त्री को जीवन में संकटपूण स्तिथियों से जूझना पड़ता है। इस तरह हम देखते हैं कि हिन्दी कहानी साहित्यकारों ने समाज की बुरी परिणतियों का प्रतिपादन कर, यह बोध जगाया है कि स्त्री के प्रति सहानुभूतिपूण रवैया अपनाया जाए। और उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास की संभावनाएं समाज में खुल पडनी चाहिए।

नारी मुक्त संघर्ष :

नारी मुक्त संघर्ष आज के युग में तीव्र रूप में है। हिन्दी साहित्यकारों ने भी अपने कथा साहित्य के द्वारा इस संघर्ष का विश्लेषण करते हुए स्त्री संघर्ष का प्रोत्साहन भी किया है। घर - परिवार तक सीमित रहती आयी नारी, आजकल

अपनी शक्ति प्रतिभाओं का सदुपयोग, नौकरी के दौरान करने लगी है। शिक्षा और नौकरी के द्वारा सशक्त होने के प्रयास में है। आज नारी परिवार को अतिरिक्त आर्थिक सहारा प्रदान करने लगी है। परिवार में उसका अलग महत्व बनने लगा है। आज स्त्री शिक्षित होकर जागरूक है। आर्थिक रूप से स्वावलंबन है। उसने परंपराओं का कठोर विरोध किया और अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करने लगी। आज नारी समाज के बंधनों से ऊपर उठकर सोचने लगी है। इस प्रकार वह अपने यथार्थ को ढूंढने का प्रयास कर रही है। आज की आधुनिक नारी श्रमजीवी होकर घर और बाहर (नौकरी से) दोनों कार्य सफलतापूर्वक कर रही है। इस कारण आधुनिक नारी झुकना नहीं चाहती वह अपने आत्मसम्मान की रक्षा चाहती है। परंपरागत मान्यताएं एवं नैतिक आदर्श अब उसके लिए उतने महत्वपूर्ण नहीं रह गए हैं। आज ग्रामीण नारी भी किसी न किसी रूप में इस नवीन मानसिकता से अवश्य प्रभावित है। ग्रामीण नारी भी आज अपने अधिकारों के प्रति जागरूक दिखाई देने लगी है। वह आज परंपरागत पुरूष - आधिपत्य को नकार रही है। स्पष्ट है कि ग्रामीण नारी भी आज मात्र तस्वीर नहीं रह गई है, जिसे जहां चाहे 'फिट' करके रख दिया जाये।

नारी आज नौकरी के माध्यम से आर्थिक स्वावलंबन प्राप्त कर और अपनी शक्ति प्रतिभाओं के सदुपयोग की सुविधा के बावजूद समाज में कुरीतियों, रूढ धारणाओं एवं संकीर्णताओं के कारण असंतुष्ट है। इसी तनाव संघर्ष को उषा प्रियंवदा के "छुट्टी का दिन" कहानी में दर्शाया गया है। "छुट्टी के दिन" की मिस सहगल नौकरी और स्वावलंबन के बावजूद व्यस्तता के कारण, घड़ी भर के लिए भी फुर्सत नहीं पाती है। वह टूटन तथा थकान का अनुभव करती है — "अपने जिंदगी के पैटर्न पर, उसके खोखलेपन और सारहीनता पर"। इसी तरह चित्रा मुदगल की "अपनी वापसी", मृदुलागरग "राख", मन्नू भण्डारी की "बंद दराजों का साथ" और "नई नौकरी" आदि जैसी कई कहानियों में नारी सामाजिक परिवेश की जटिलताओं के कारण, नौकरी के रूप में प्राप्त आर्थिक स्वावलंबन के बावजूद जीवन में व्यर्थता का तीखा बोध व्यक्त करती है। घर और दफ्तर या काम के अन्य जगहों पर उसे अनेक प्रकार के मानसिक तनाव सहने पडते हैं। नौकरी के लिए आते - जाते समय नारी को तरह - तरह की यातनाओं का सहन करना पड़ता है। अपनी नौकरी के पदोन्नति की संभावनाओं को बनाए रखने के लिए नारी को सामाजिक संबंधों को भी निभाना होता है। मालिक, अधीनस्थ और सहकर्मी सभी उसका शोषण करने का प्रयत्न करते हैं। आज भी उसे नारी ही समझा जा रहा है, एक व्यक्ति नहीं।

निष्कर्ष :

आज नारी अपमानित जीवन व्यतीत न कर, अपने पैरों पर खड़ी होकर अपने स्वाभिमान की रक्षा करने की शक्ति रखती है। महादेवी वर्मा जी मानतीं है कि यदि नारी को बढना है तो उसे अपना अस्तित्व पहचानना होगा, स्वीकारना होगा। हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री सशक्तिकरण पर विशेष बल दिया गया है। हिन्दी कथा साहित्य में कथाकारों ने यह उद्घाटन सफलतापूर्वक करने का प्रयत्न किया है कि नारी जीवन के सहज विकास के लिए आर्थिक औननतय, जीवन की सुविधाओं की उपलब्धि, सुरक्षा की व्यवस्था प्रदान करना आवश्यक है। भविष्य के निर्माण के लिए वर्तमान के तमाम प्रतिरोधों के बावजूद वह निरंतर गतिशील है। निष्कर्ष में यह आशा है कि स्त्री और पुरुष दोनों की सहनता और आपस की समझ(एक दूसरे के प्रति) एवं वैचारिक परिवर्तन से स्त्री का पूर्ण रूप से विकास हो सकता है। फिर भी स्त्री को सतर्कता से जीवन में अपने कदम बढाते चले जाना है।

****